'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 22 | अंक 21 | 19 जनवरी, 2019 | कुल पृष्ठः 8 | एक प्रतिः रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

युग दृष्टा को सादर नमन!

हे युग दृष्टा! आपको सादर नमन! आगामी 25 जनवरी को हम सब आपका 96वां अवतरण दिवस एवं 95वीं जयंती मना रहे हैं। आपके जन्मदिन को अवतरण दिवस कहते हुए झिझक सी होती है क्योंकि अवतार तो उसको कहते हैं जो सामान्य जन की पहुंच से बाहर हो लेकिन आप तो कभी किसी की पहुंच से बाहर रहे ही नहीं। आपने तो स्वयं यह घोषणा की कि आप अपनी ऊँचाई छोड़कर गहरे नीचे तक हम सबके बीच आये और सदैव स्वयं को हमारे जैसा बनाये रखा जिससे हमें आप सदैव हमारी सीमा में लगें और हम आपका अनुसरण कर सकें। इसलिए आप असाधारण होते हुए सदैव साधारण बने रहे और अपने साथ चलने वालों को असाधारण बनाते रहे। इसीलिए तो आपने कर्म, ज्ञान और भक्ति के असाधारण मार्ग को हम सबके लिए साधारण बनाकर अद्भुद समन्वयात्मक मार्ग प्रदान किया। एक ऐसा मार्ग जहां न ज्ञान की शुष्कता है और न कर्म का कर्त्तापन और न ही भक्ति की अकिंचनता बल्कि ज्ञान की ऊँचाईयों के साथ कर्म की तेजस्विता है और भक्ति के समर्पण के साथ ज्ञान का प्रकाश। आपने कर्म, ज्ञान और भक्ति का ऐसा सरल एवं समन्वयात्मक मार्ग प्रस्तुत किया कि इस पर चलने वाले को चाहे कर्म, ज्ञान और भक्ति का अर्थ पता नहीं हो लेकिन उसके जीवन में शनैः शनैः ये उतरते रहते हैं।

(शेष पृष्ठ 3 पर)

शीतकालीन शिविरों में लिया प्रशिक्षण

लाडनूं

श्री क्षत्रिय युवक संघ का 73वां सत्र 22 दिसंबर 2018 से प्रारम्भ हो चुका है और नवीन सत्र में भी शिविरों की श्रृंखला निरंतर चल रही है। इसी क्रम में 23 दिसंबर से 7 जनवरी की अवधि में 14 शिविर सम्पन्न हुए जिनमें पांच माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर तथा नौ प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर सम्मिलित हैं। ये शिविर उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, गुजरात व राजस्थान राज्यों में आयोजित हुए। उत्तरप्रदेश के घाटमपुर (कानपुर) स्थित बदनसिंह महाविद्यालय के परिसर में 25 से 28 दिसंबर की अवधि में एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ जिसमें घाटमपुर, मदूरी, बर्नाव, कूटरा, मकरनपुर, भद्रस, महोबा व बाँदा से शिविरार्थी सम्मिलित हुए। शिविर का संचालन करते हुए संघ के संचालन प्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बेण्यांकाबास ने कहा कि उत्तरप्रदेश में संघ का कार्य अभी प्राथमिक चरण में है तथा धीरे-धीरे यह कार्य स्थायित्व प्राप्त कर रहा है किन्तु श्री क्षत्रिय युवक संघ का कार्य त्याग और बलिदान की मांग करता है। इस मांग को पूरी करने का दायित्व हम सबका है। आप सबने यहां जो सीखा है उस ज्ञान और संस्कार को आपको पूरे क्षेत्र में प्रसारित करना है। अरविंद सिंह, शैलेन्द्र सिंह, इंद्रजीत सिंह, कुलदीप सिंह, मनमोदन सिंह आदि ने शिविर की व्यवस्था में सहयोग किया।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

संचालन प्रमुख का गुजरात प्रवास

श्री क्षत्रिय युवक संघ के संचालन प्रमुख श्री लक्ष्मण सिंह बेण्यांकाबास 6 से 11 जनवरी तक गुजरात प्रवास पर रहे। इस दौरान वहाँ के स्वयंसेवकों द्वारा राज्य के अलग-अलग भागों में चिंतन बैठकों का आयोजन किया गया, जिनमें गुजरात में संघ कार्य के और अधिक विस्तार पर चर्चा के साथ ही समाजबंधुओं को संघ के उद्देश्य, प्रणाली व सिद्धांतों की सांगोपांग जानकारी प्रदान की गई।

6 जनवरी को अहमदाबाद शहर स्थित राजस्थान राजपूत परिषद के भवन में प्रथम बैठक का आयोजन हुआ। बैठक में संचालन प्रमुख जी ने

श्री क्षत्रिय युवक संघ के नाम के तीनों अंगों 'क्षत्रिय', 'युवक' एवं 'संघ' की अलग-अलग व्याख्या करते हुए बताया कि सृष्टि में व्याप्त विष तत्व का विनाश करने वाला तथा अमृत तत्व की रक्षा करने वाला ही क्षत्रिय है। इसी प्रकार युवक उत्साह तथा क्षमता का पर्याय है। संघ का शाब्दिक अर्थ व्यक्ति की क्षमताओं को सामूहिक स्वरूप देने से है।प्रान्त प्रमुख श्री दीवान सिंह काणेटी ने संघ व पूज्य तनसिंह जी का परिचय प्रस्तुत किया।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

साधुवाद सरकार, आशंका बरकरार

विगत लंबे समय से वर्तमान व्यवस्था में उपेक्षा की हीन भावना से ग्रसित सामान्य वर्ग के लिए विगत कुछ दिन शुभ समाचार लेकर आये। आरक्षण व्यवस्था की विसंगतियों के कारण कुंठा पाल चुके सामान्य वर्ग के युवाओं में इस विश्वास की झलक पैदा हुई कि इस व्यवस्था में वे नितांत उपेक्षित नहीं हैं बल्कि कोई उनकी भी सुनता है। उनमें यह आत्मविश्वास भी पैदा हुआ कि इस व्यवस्था में जो सुनाने की कुव्वत रखते हैं, सरकारें उनकी ही सुनती हैं और उनका यह आत्मविश्वास निश्चित रूप से उन्हें इस राष्ट्र में अपनी सकारात्मक भूमिका खोजने को प्रेरित करेगा। आरक्षण के आधारों में आर्थिक आधार शामिल करने के लिए संविधान संशोधन कराने वाली सरकार ने चाहे किसी भी स्वार्थ या मजबूरी से प्रेरित होकर यह निर्णय लिया हो लेकिन इस बात में कोई दो राय नहीं कि सरकार का यह कार्य सराहनीय है और केन्द्र की सरकार इसके लिए साधुवाद की पात्र है। आरक्षण कब मिलता है, कितना मिलता है, कैसी कानूनी अड़चनें आयेंगी, कौन विरोध करेगा, कौन सहयोग करेगा और कैसे व्यवहारिक होगा ये सभी प्रश्न उठाये जा सकते हैं और उठाये जा रहें हैं लेकिन इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि सरकार का यह कदम इस मार्ग के सबसे बड़े अवरोध को हटाने में सफल रहा है और इसके लिए सरकार साधुवाद की पात्र है। न्यायपालिका इसकी न्यायिक समीक्षा कर सकती है, प्रश्न खड़े कर सकती है, इसे और ढंग से लागू करवाने का या रोकने का काम कर सकती है लेकिन कार्यपालिका और व्यवस्थापिका की पहल सराहनीय है और इसके लिए सरकार के साथ साथ सहयोग करने वाला विपक्ष भी साधुवाद का पात्र है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

प्रणेता से प्रेरणा

पूज्य तनसिंह जी श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रणेता हैं। उनका जीवन हम सब स्वयंसेवकों एवं सहयोगियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनके जीवन की हर घटना हमारे लिए दिशा दर्शक है जो हमें उनके मार्ग पर बढ़ने की प्रेरणा देती है। ऐसी ही प्रेरणादायी घटनाओं का संकलन पथप्रेरक के इस कॉलम में धारावाहिक रूप से प्रकाशित किया जा रहा है।

संबंधों में 'स्व' का अत्यधिक महत्व होता है। 'स्व' का संबंध ही निकटता का बोध करवाता है। स्वमाता, स्वजाति, स्वधर्म, स्वराष्ट्र आदि में 'स्व' शब्द ही है जो जिसके साथ जुड़ता है उसे अपना बना लेता है। पूजय तनसिंहजी इस 'स्व' को बहुत महत्व देते थे। जो अपनों को नहीं होता वह ारायों को अपना नहीं बना सकता। जो अपने गांव से प्रेम नहीं करता वह यदि राष्ट्र प्रेम की बात करता है तो बात सुंदर भले ही कितनी ही लगे पर उतनी ही अव्यवहारिक है और पाखंड है। पूज्य श्री ने इसी व्यवहारिकता को अपने जीवन में उतारा। श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना कर समाज की सेवा करना उनके इसी दर्शन का परिणाम था। वे इस रत्नगर्भा जाति का सम्मान और प्रेम करते थे लेकिन साथ ही अपने से स्व संबंध वाली हर सत्ता के प्रति प्रेम एवं सम्मान का संबंध रखते थे। इसी क्रम में उन्हें अपनी जन्म भूमि बाड़मेर से विशेष प्रेम था। बाड़मेर के लोग जहाँ भी मिलते उनके लिए प्रस्तुत रहते थे। जब वे सिवाणा में रहते थे तब का एक ऐसा ही किस्सा है जो उनकी इस बात को पुष्ट करता है। सिवाणा में रहते थे तब एक बार उन्होंने वर्तमान संघ प्रमुख श्री को पैट्रोल लेने बालोतरा भेजा और बताया कि नदी पार अमुक पेट्रोल पंप से पेट्रोल लेकर आना है। पूज्य श्री सदैव उसी पेट्रोल पंप से तेल भरवाते थे। संघ प्रमुख श्री बस द्वारा सिवाणा से बालोतरा पहुंचे लेकिन पेट्रोल पंप से पहले बीच में नदी बह रही थी। बस ने नदी के इस पार उतार दिया। पैदल चलकर नदी पार की। पेट्रोल लिया एवं जरीगन सिर पर उठाकर बहती नदी को पार कर साधन पकड़ कर सिवाणा पहुंचे। सिर पर भारी जरीगन उठाकर नदी पार करने में हुई परेशानी का जिक्र करते हुए उन्होंने पूज्य श्री से पूछ लिया कि पेट्रोल पंप तो नदी के इस पार मार्ग में और भी हैं, आप उसी पेट्रोल पंप से पेट्रोल लेने को क्यों कहते हैं। पूज्य श्री का उत्तर था कि घी तो मूंगा में ही ढुळणो चाहिजे अर्थात वह पेट्रोल पंप बाड़मेर के एक व्यक्ति का है और मैं बाड़मेर का हूँ इसलिए मुझे जब पेट्रोल खरीदना है तो उसी से खरीदना चाहिए जिससे कुछ लाभ हो तो उसी को हो। यह था पूज्य श्री का 'स्व' संबंध। उनका यह स्व संबंध स्व जाति, स्वधर्म एवं राष्ट्र आदि सभी स्व संबंधों में झलकता था। इन्हीं स्व संबंधों का क्रमशः विस्तार करते हुए इन्हें समष्टि के सभी आयामों को छूते हुए परमेश्वर तक ले जाना ही तो संघ की यात्रा है। पूज्य श्री परमेश्वर तक की इसी यात्रा को श्री क्षत्रिय युवक संघ के रूप में संयोजित कर हम सबके लिए छोड़कर गए हैं।

जीवनोपयोगी जानकारी

गतांक से आगे.... - अभयसिंह रोडला

कृषि विज्ञान के छात्रों हेतु उपलब्ध विकल्पों पर चर्चा के क्रम में हम अब उन विशिष्ट क्षेत्रों की सामान्य जानकारी प्राप्त करेंगे, जो कृषि विज्ञान के छात्रों के लिए कैरियर निर्माण की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं।

1. कृषि अभियांत्रिकी (Agricultural Engineering)

इसके अन्तर्गत कृषि उत्पादन में वृद्धि तथा सातत्य से संबंधित समस्याओं के समाधन हेतु वैज्ञानिक सिद्धान्तों व तकनीक का प्रयोग सम्मिलित है। कृषि अभियांत्रिकी की कुछ प्रमुख अनुप्रयुक्त शाखाएं इस प्रकार हैं :

1. डेयरी योजना विकास व प्रबंधन
2. सिंचाई और जल निकास
3. बाढ़ नियंत्रण
4. पर्यावरणीय प्रभाव आकलन (Enviranmental Impact Assesments)
5. खाद्य व जैव इंजीनियरिंग
6. मृदा व जल संरक्षण

कृषि अभियांत्रिकी (Agricultural Engineer) के रूप में सरकारी संस्थाओं में, विश्वविद्यालय, कृषि प्रयोगशालाओं, सहकारी कृषि संस्थाओं, कृषि उपकरणों की निर्माता कंपनियों, फर्टिलाइजर कम्पनियों, कृषि आधारित उद्योगों (यथा शक्कर उद्योग) आदि में कैरियर निर्माण की वृहद संभावनाएं है।

कृषि अभियांत्रिकी के अन्तर्गत छात्र को विविध विषयों का अध्ययन करना होता है, जिनमें से प्रमुख विषय इस प्रकार है :

- कृषि सैद्धान्तिकी
- मृदा विज्ञान
- हॉर्टीकल्चर एवं फील्ड क्रॉप्स
- फार्म इम्प्लीमेन्टस
- सर्वेमिंग एण्ड लेवलिंग (Surveying & Leveling)
- प्रारंभिक जैव प्रौद्योगिकी
- फार्म मशीनरी
- हाइड्रोलॉजी इंजीनियरिंग
- सॉईल मैकेनिक्स
- युनिट ऑपरेशन इन फूड इंजीनियरिंग
- सॉईल फिजिक्स
- एग्री बिजनेस मैनेजमेंट
- पोस्ट हार्वेस्ट एण्ड स्टोरेज इंजीनियरिंग
- ट्रेक्टर्स एण्ड पॉवर युनिट्स
- क्राप प्रोसेस इंजीनियरिंग
- रिन्युएबल एनर्जी
- ड्रेनेज इंजीनियरिंग
- हाइड्रोलिक्स एण्ड डिजाईन ऑफ ईरीगेशन सिस्टम्स
- एन्टरप्रेन्योरशिप डेवलपमेन्ट ऑन एग्रो इण्डस्ट्रीज
- डेयरी इंजीनियरिंग

क्रमशः

स्वरूपसिंह जिंझनियाली

क्षत्रिय जाति में अनेक लोक सन्त हुए हैं और उनके लिये अनेकों लोकोक्तियां एवं लोक आख्यायान उपलब्ध हैं। मालवा एवं हाड़ोती क्षेत्रों के संगम पर गढ़ गांगरौन का प्रसिद्ध किला है जो अपने जौहर एवं शाकों के लिए विख्यात है। हाड़ा राजपूत राजाओं की कोटा रियासत के सामन्त झाला जालिम सिंह की बसाई गई रियासत झालावाड़ (जिला) में वर्तमान में यह किला आता है। गढ गांगरौन का क्षेत्र डोड, डोडा अथवा डोडिया क्षत्रियों की हकुमत का हिस्सा था। इसलिए तब यह स्थान डोडरगढ़ के नाम से जाना जाता था। सम्राट पृथ्वीराज चौहान (द्वितीय) के शासन काल के समय मारवाड़ के वर्तमान नागौर जिले के जायल परगने से जाकर चौहान गूंदल राव खींची ने डोड राजपूतों के बारह गढ किलों पर कब्जा जमा लिया। इसी खींची चौहान शाखा के शासक राव देवनसी ने डोडरगढ के राजा बीजलदेव डोड को हराकर अपना संगठित राज्य स्थापित किया और अपनी बहन गंगा कुंवरी के नाम से डोडरगढ़ का नाम गढ गांगरौन रखकर उसका पुनर्निर्माण कराया।

खींची राव देवनसी की गयारहवीं पीढ़ी में गढ़ गांगरौन के शासक राव पीपाजी खींची हुए। वे सुयोग्य, प्रजा वत्सल एवं बहादुर शासक थे। उनका जन्म विक्रम संवत् 1380 की चैत्र पूर्णिमा को हुआ था। पीपाजी ने अपने राज्य विस्तार एवं उसकी सुरक्षा के लिये अनेक युद्ध लड़े। फिरोज शाह तुगलक की मालवा जाती सेना से लोहा लिया जिसमें तुगलक को मुंह की खानी पड़ी। उन्होंने अपने ससुर राव डूंगरसी सोलंकी की सहायतार्थ टोडा का युद्ध लड़ा।

हर क्षत्रिय शासक की तरह राव पीपाजी शिकार में बहुत दिलचस्पी रखते थे। एक दिन वे गांगरौन के अरण्य में आखेट के लिये अपने दल बल के साथ निकले। उनके घोड़े के आगे से एक चिंकारा हिरणी छलांगे लगाती गुजरी। बस क्या था? पीपाजी की तलवार के वार से हिरणी के शरीर के दो टुकड़े हो गये। वह हिरणी गर्भस्थ थी। जिससे उसके उदर में पल रहा सांसर से अनभिज्ञ बच्चा भी कट गया। इस करुण घटना ने पीपाजी को सांसारिकता से वैराग्य और विरक्ति की ओर मोड़ दिया। उन्होंने रजपूती तलवार को हमेशा हमेशा के लिये म्यान में डाल दी जो पुनः कभी उनके हाथ से बाहर नहीं निकली। पीपाजी ने अपना राजपाट त्याग दिया एवं फिर कभी गांगरौन की गद्दी की तरफ नहीं झांका। वे जंगल में कुटिया बनाकर तपस्या करने लगे। राव पीपाजी सन्त रामानन्द स्वामी के शिष्य बन गये। रामानन्द सन्त कबीर के गुरू थे। कहते हैं कि सन्त रामानन्द के बारह शिष्यों में पीपाजी को गिना जाता है। अन्य सभी शिष्य पिछड़े अथवा दलित समाज से संबंध रखते थे, केवल पीपाजी क्षत्रिय राजकुमार थे। सन्त पीपाजी अपने आश्रम में सुई धागा लेकर लोगों के लिए वस्त्र सिलने का कार्य करने लगे। उनके अधिकांश शिष्य जो क्षत्रिय थे सिलाई कार्य में संलग्न हो गये। इस तरह उनके शिष्यों से दर्जी का कार्य करने वाली पीपा दर्जी क्षत्रिय जाति का अभ्युदय हुआ जो अपने गौत्र के नाम उपनाम राजपूत समुदाय के गौत्र के समान लगाते हैं। ये अधिकांशत राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश सहित अनेक प्रदेशों में पाये जाते हैं। वे पीपाजी को अपना आराध्य देव मानते हैं। पीपाजी की शिक्षाएं सहज दर्शन, उदारवादी धर्म एवं करूणा की थीं। वे निर्गुण भक्ति के माने जाते हैं। वे प्राणी मात्र से प्रेम करते थे। उन्होंने अपने शिष्यों को आध्यात्म के साथ-साथ उदरपालन कर्म की शिक्षा दी। सन्त पीपाजी ने वि.स.1441 चैत्र सुदी प्रथमा को इस लौकिक संसार का त्याग किया।

उनका एक संदेश वाणी रूप में इस तरह है-

जीव मार जौहर करे,
खातां करे बखाण।
पीपा परख कर देख ले,
थाली मायं मसांण।।
पीपा पाप न कीजिये,
अलगो रहीजै आप।
करणी जावे आपरी,
कुण बैटो कुण बाप।।

गढ गांगरौन में पीपा जी की छतरीयां, मंदिर एवं बाग है तथा द्वारका, काशी सहित भारत के अनेकों स्थानों पर इनके मंदिर हैं जहां ये श्रद्धा से पूजे जाते हैं।

251 प्रतिभाओं का हुआ सम्मान

राजपूत शिक्षा कोष को दिए 11 लाख

मारवाड़ राजपूत सभा के तत्वावधान में 30 दिसंबर को आयाजित प्रतिभा सम्मान समारोह में 251 प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर केन्द्रीय कृषि राज्य मंत्री एवं जोधपुर सांसद गजेन्द्रसिंह ने पूर्व सांसद नारायणसिंह माणकलाव द्वारा संचालित राजपूत शिक्षा कोष में 11 लाख रूपये सहयोग देने की घोषणा की। उल्लेखनीय है कि श्री माणकलाव ने राजपूत समाज की कमजोर आर्थिक पृष्ठभूमि वाली प्रतिभाओं की शिक्षा हेतु 10 करोड़ का एक कोष बनाने का संकल्प लिया है जिसमें प्रत्येक राजपूत से यथायोग्य सहयोग मांग रहे हैं। इस कोष द्वारा विगत वर्षों से चुनिंदा प्रतिभाओं की शिक्षा की व्यवस्था की जा रही है। प्रतिभा सम्मान समारोह को मंत्री गजेन्द्रसिंह के अलावा पूर्व नरेश गजसिंह, जे.एन.वी.यू. के कुलपति गुलाबसिंह, विधायक हमीरसिंह, मीना कंवर, नारायणसिंह देवल, नारायणसिंह माकणलाव, समतारामजी, गिरीराजसिंह लोटवाड़ा, हनुमानसिंह खांगटा आदि ने संबोधित किया। वक्ताओं ने बालक बालिकाओं को मानिसक रूप से मजबूत बनाने, प्रतिभाओं का उचित मार्गदर्श करने आदि विषयों पर अपनी बात कही।

स्वर्गीय प्रेमसिंह चुण्डावत स्मृति प्रतियोगिता संपन्न

उदयपुर की बी एन ओल्ड बॉयज एसोसिएशन एवं हॉकी उदयपुर की मेजबानी में स्वर्गीय प्रेमसिंह चुण्डावत स्मृति राज्य स्तरीय मिनी जुनियर (14 वर्ष) हॉकी प्रतियोगिता का समापन 9 जनवरी को बी.एन. विश्वविद्यालय मैदान पर हुआ। प्रतियोगिता में फाइनल मैच उदयपुर एवं हनुमानगढ़ के बीच बराबर अंक होने पर हनुमानगढ़ को टाई ब्रेकर से विजयी घोषित किया। समापन समारोह को संबोधित करते हुए केन्द्रीय कृषि राज्य मंत्री गजेन्द्रसिंह शेखावत ने स्व. प्रेमसिंह की जीवन यात्रा की अविस्मरणीय बनाये रखने के लिए आयोजित की जा रही प्रतियोगिता की प्रशंशा की एवं बी.एन. से जुड़े अपने संस्मरण सुनाये। समारोह में विधायक चन्द्रभानसिंह अक्या, रतनसिंह झाला, भूपेन्द्रसिंह चुण्डावत, हिम्मतसिंह झाला, गुणवंतसिंह झाला, मोहब्बतसिंह राठौड़ अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। समारोह की अध्याता प्रदीपसिंह सांगावत ने की।

मीनाक्षी कंवर राठौड़ को डॉक्टरेड की उपाधि

जयपुर संभाग प्रमुख राजेन्द्रसिंह बोबासर की पुत्री मीनाक्षी कंवर ने जर्नलिज्म एवं मास कम्युनिकेशन में डॉक्टर ऑफ फिलोसफी की डिग्री हासिल की है। ये वर्तमान में निम्स विश्वविद्यालय में असिस्टेंट प्रोफेसर के रूप में कार्यरत है।

त्रैमासिक बैठक संपन्न

मेवाड़ मालवा एवं उदयपुर वागड़ संभाग की संयुक्त त्रैमासिक बैठक 6 जनवरी को उदयपुर स्थित ओस्टवाल नगर में केन्द्रीय कार्यकारी गंगासिंह साजियाली के निर्देशन में रखी गई। बैठक में दोनों संभाग प्रमुख भंवरसिंह बेमला एवं बृजराजसिंह खारड़ा अपने प्रांत प्रमुखों व अन्य सहयोगियों सहित उपस्थित रहे। बैठक में आगामी उ.प्र.शि. तक की कार्ययोजना बनायी गई। मंडल प्रमुखों के दायित्व तय किए गए। संघ शक्ति एवं पथ प्रेरक की ग्राहक सदस्यता हेतु अभियान चलाने को लेकर चर्चा की गई। वर्तमान सत्र में उ.प्र.शि. के बाद लगने वाले शिविरों हेतु संभावित स्थलों को लेकर भी चर्चा की गई। वर्तमान में लग रही शाखाओं को लेकर चर्चा की गई। संभावित शाखाओं को लेकर लक्ष्य तय किए गए।

डॉ. दिलीपसिंह बने जिलाध्यक्ष

अखिल राजस्थान लेबोरेटरी तकनिशियन कर्मचारी संघ की जिला शाखा अजमेर के 25 दिसंबर को चुनाव संपन्न हुए जिनमें डॉ. दिलीपसिंह दाबडदुंबा अध्यक्ष निर्वाचित हुए। डा. दिलीपसिंह संघ के सहयोगी हैं।

महेन्द्रसिंह फतेहगढ़ बने कार्यवाहक जिलाध्यक्ष

मंदसौर जिला राजपूत समाज की साधारण सभा की बैठक प्रताप भवन मंदसौर में यशपालसिंह सिसोदिया, ओमसिंह भाटी, भोपालसिंह सिसोदिया आदि संरक्षकगण की उपस्थिति में संपन्न हुई जिसमें वरिष्ठ उपाध्यक्ष महेन्द्रसिंह फतेहगढ़ को कार्यवाहक अध्यक्ष मनोनीत किया गया। बैठक में समाज के लिए भूमि आवंटन में अग्रणी भूमिका निभाने वाले तीसरी बार विधायक बने यशपालसिंह सिसोदिया, धनसंग्रह में महत्वपूर्ण निभाने पर दुर्गेश कंवर भाटी, खाटू श्यामजी मंदिर निर्माण में अग्रणी भूमिका निभाने पर नरेन्द्रसिंह चौहान को सम्मानित किया गया। सर्वसम्मति से 100 रूपये सदस्यता शुल्क निर्धारित की गई एवं ऐसे सदस्य को निर्वाचन प्रक्रिया में भाग लेने का अधिकार देने का निर्णय लिया गया। सर्वसम्मति से तय किया गया कि सभा के पदाधिकारियों का कार्यकाल 2 वर्ष रहेगा एवं एक पदाधिकारी एक बार ही पदाधिकारी बन पायेगा।

गिरिसुमेल में बलिदान दिवस मनाया

वीरवर जेता कुंपा के नेतृत्व में शेरशाह सूरी से हुए युद्ध में बलिदान हुए योद्धाओं की स्मृति में प्रतिवर्ष मनाये जाने वाले बलिदान दिवस की कड़ी में इस वर्ष भी पांच जनवरी को कार्यक्रम रखा गया। पूर्व मंत्री राजेन्द्रसिंह राठौड़, सांसद हरिओमसिंह, विधायक खुशवीरसिंह, पूर्व सांसद नारायणसिंह माणकलाव, विधायक अविनाश गहलोत, विधायक शोभा चौहान आदि के आतिथ्य में आयोजित कार्यक्रम में वक्ताओं ने बलिदानी वीरों एवं उत्सर्ग मूलक संस्कृति से सीख लेने की बात कही। बलिदान क्षेत्र के विकास को लेकर भी चर्चा की गई। बलिदान समिति के संयोजक कानसिंह उदेशी कुआं ने समिति के नये सिरे से गठन की बात कही।

(पृष्ठ एक का शेष)

युग दृष्टा... वह कब कर्म करते करते अपने कर्तापन को छोड़ निष्कामता की ओर बढ़ता रहता है उसे स्वयं ही भान नहीं होता। वह कब पूर्णमदः पूर्णमिदं का ज्ञान अर्जित कर ज्ञानी बनता है उसको खुद को अहसास नहीं होता और वह कब इदं न मम को चरितार्थ कर भक्त बन जाता है उसको यह भान भी नहीं रहता। हे युग पुरूष? आपकी इस समन्वयात्मक शिक्षा में संसार का सार और असार दोनों समाहित हैं। सन्यास लिए बिना संयासी बनने की प्रेरणा है। गृहस्थ रहते हुए गृहस्थी के पार जाने का प्रबलन है। हे महात्मन! इस मार्ग पर भाग्य और पुरूषार्थ का झगड़ा नहीं है बल्कि भाग्य नवीन पुरूषार्थ का कारण बनता जा रहा है और पुरूषार्थ पुराने भाग्य को पलटने को तत्पर है। हे मार्गदर्शक! आपका यह मार्ग व्यक्ति और सिद्धांत का अद्भुत मेल है। संसार जहां व्यक्ति बड़ा या सिद्धांत के झगड़े में संलग्न है वहीं आपने बताया कि एक सिद्धांतवान व्यक्ति अनेकों सिद्धांत हीन व्यक्तियों पर भारी पड़ता है वहीं जो सिद्धांत किसी व्यक्ति में प्रकट नहीं होता वह अव्यवहारिक एवं त्याज्य है। इसीलिए आपने मार्ग प्रशस्त किया कि सिद्धांतवान व्यक्ति का अनुसरण कर सिद्धांत और व्यक्ति दोनों का सम्मान करें एवं सिद्धांत को व्यवहार में ढालने के लिए ऐसे व्यक्ति के प्रति निष्ठावान बनें। यदि गहराई से आपके इस मार्ग के बारे में सोचते हैं तो पाते है संसार का कौनसा दर्शन इसमें समाहित नहीं है। वह सब कुछ तो है जो साधारण को असाधारण बनाने को चाहिए, जो नर को नारायण बनाने को चाहिए, हे महात्मन्! मुझे आपके भौतिक दर्शन करने का सौभाग्य तो नहीं मिला लेकिन अपने आपको भाग्यहीन भी नहीं कहता क्योंकि आपके दर्शन के मूर्तिमान स्वरूप के दर्शन लगभग सदैव हो जाते हैं। ऐसा अवश्य मानता हूँ कि यदि आपके भौतिक दर्शन होते तो आपके इस मार्ग का एक ही जगह पूंजीभूत दर्शन हो जाता और आज वह अनेक लोगों में प्रसारित हो विरल हो गया है। लेकिन जब भी आपकी कृपा से इधर उधर देखता हूँ तो सर्वत्र आप ही आप दिखाई देते हैं। कभी खेल के मैदान में तो कभी चर्चा में, कभी बौद्धिक में तो कभी भोजन में, कभी प्रार्थना में तो कभी सहगायनों में, कभी साहित्य में तो कभी प्रवचनों में, कभी शाखा में तो कभी शिविर में, कभी स्नेहमिलनों में तो कभी प्रवास में प्रायः आप मिल ही जाते हैं अपने इस मार्ग को लेकर और आग्रह करते हैं, 'ढुक पीले रे प्यालो के पुळ ओ कुण जाणै फिर आसी।'

हे मेरे जीवन के दिर्शादर्शक! अपने कृपा करने के स्वभाव वश मुझ पर सदैव इतनी कृपा बनाये रखना कि मैं सदैव आपके दर्शन पाता रहूं, सदैव आप किसी न किसी रूप में मेरी अंगुली पकड़ कर अपनी ओर खींचते रहना और सदैव मेरी क्षमताओं की सीमा में रहना, यदि मेरी क्षमताएँ कम हों तो अपनी प्रवृति अनुसार या तो नीचे उतरना या उसे ऊपर खींचना। सदैव आपकी इसी कृपा का आकांक्षी बनकर आपके बताये मार्ग पर बना रहूँ बस यही प्रार्थना है। प्रार्थना स्वीकार हो, देव!

संपादकीय

पिछड़े हैं पर किससे?

प्रायः हर सामाजिक चिंतन में यह बात उभर कर आती है कि हम पिछड़ गये हैं। हमारी आज की स्थिति ठीक नहीं है। यदि गंभीरता से सोचें तो भी यही बात समझ में आती है कि हम वास्तव में ही पिछड़ गए हैं। समाज की पीड़ा से पीड़ित हर हृदय महसूस करता है कि हम पिछड़ गए हैं। लेकिन इस स्वीकारोक्ति के बाद अगला प्रश्न उठता है कि हम किससे पिछड़ गए हैं? पिछड़ना और आगे होना दोनों ही तुलनात्मक आकलन है। किसी भी स्थिति को पिछड़ा हुआ तभी कहा जा सकता है जब उस स्थिति से आगे की कोई स्थिति उपस्थित हो। ऐसे में हमें यह सोचना चाहिए कि हम यदि पिछड़े हैं तो किस स्थिति से पिछड़े हैं? इस बात को लेकर अधिसंख्य लोगों का मानना है कि हम अन्य लोगों से पिछड़े हैं। पूरे भारत में तथाकथित प्रगतिवादी लोगों का मानना है कि हम युरोप से पिछड़े हैं या अमेरिका से पिछड़े हैं। कुछ दक्षिण पंथी लोग इसके लिए जापान, इजरायल आदि का उदाहरण देते हैं। हमारे समाज की बात करें तो ऐसे लोग मानते हैं कि हम अन्य समाजों से पिछड़े हैं। ऐसे लोगों का मानना होता है कि हम आज की शिक्षा में पिछड़े हैं, हम आज की राजनीति में पिछड़े हैं, हम पैसा कमाने में पिछड़े हैं, वैभव विलास के साधन न जुटाने में पिछड़े हैं, नौकरियों में पिछड़े हैं, उपलब्ध तकनीकी में पिछड़े हैं, विभिन्न प्रकार के व्यवसायों में पिछड़े हैं आदि आदि। जब भी हम संसार के अन्य लोगों की तरफ नजर दौड़ाते हैं, उनसे तुलना करते हैं तो निश्चित रूप से पिछड़ापन नजर आता है। जिन लोगों की नजरें अन्य लोगों पर जाकर ठहरती हैं वे प्रायः इस पिछड़ेपन पर गाहे ब गाहे चिंता व्यक्त करते ही रहते हैं। जिनकी नजर में ये भौतिक प्राप्तियाँ ही जीवन का सार है उनकी नजर में यह पिछड़ापन अखरता है और प्रकट भी होता है। निश्चित रूप से अखरना ही चाहिए क्योंकि पिछड़ना कौन पसंद करता है। लेकिन ये ही लोग जब प्रताप की महानता के गुण गाते हैं, अनुकरण की बात करते हैं या दुर्गादास जी के त्याग को नमन करते हैं और उनके अनुकरण की भी बात करते हैं तब बात कुछ बेमेल सी हो जाती है। हम यदि प्रताप को पसंद करते हैं तो फिर अकबर के सहयोगी बनें राजाओं की तरह वैभव, संपदा और सत्ता की तरफ आकर्षित होने वाली प्रवृति में पिछड़ने की बात नहीं करनी चाहिए। यदि हमें दुर्गादास जी पंसद आते हैं तो फिर अजीतसिंह की तरह सत्ता सुख को भोगने का उतावलापन भी नहीं दिखाना चाहिए। यदि भौतिक प्राप्तियों के पीछे दौड़ते लोगों से ही हम अपने आपको पिछड़ा मानते हैं तो फिर हमें मोटा राजा उदयसिंह जी में काई कमी बताने का हक नहीं मिल जाता जिन्होंने स्वतंत्रता एवं स्वाभिमान के उपासक चंद्रसेन से अकबर का कृपा पात्र बनकर सत्ता हासिल की। हमें जगमाल में भी कोई कमी नजर नहीं आनी चाहिए जिन्होंने मेवाड़ का शासक नहीं बनाये जाने पर अकबर की जी हजूरी करना स्वीकार किया। हालांकि इस तुलना का यह अर्थ कदापि नहीं है कि ऐसी चाह रखने वालों की तुलना मोटा राजा उदयसिंह या जगमाल से की जा रही है लेकिन इस विवरण का अर्थ मात्र इतना ही है कि संसार उन्हीं चीजों के पीछे दौड़ रहा है जिनके पीछे जगमाल या मोटा राजा उदयसिंह दौड़े थे और यदि हम उसी संसार से अपने आपको पिछड़ा मानते हैं तो प्रताप और दुर्गादास का अनुकरण करने की चाह रखने वालों को इस पिछड़ेपन पर नहीं रोना चाहिए। लेकिन इसका यह अर्थ भी नहीं है कि हम पिछड़े नहीं हैं, निश्चित रूप से पिछड़े हैं। भौतिक प्राप्तियों में भी अन्यों से पीछे हैं लेकिन वास्तव में भौतिक प्राप्तियाँ हमारे लिए कभी महत्वपूर्ण नहीं रहीं। वास्तव में तो भौतिक प्राप्तियाँ तो हमारे पूर्वजों के लिए उनके मुख्य काम की सह उत्पाद रही हैं जो उनके मुख्य काम के साथ स्वतः संपादित होती रहती थी। इस प्रकार हमारे लिए यही दयनीय स्थिति हो जाती है कि जिन चीजों को हमारे पूजनीय पूर्वजों से गौण समझ कर उपेक्षा का व्यवहार किया एवं अपने कर्त्तव्य पालन को प्रधानता दी हम उन्हीं चीजों को मुख्य मान रहे हैं और यही वास्तव में पिछड़ापन है। इस प्रकार यह सिद्ध होता है कि हम पिछड़े हैं, निश्चित रूप से पिछड़े हैं लेकिन अन्यों से नहीं अपने आप से पिछड़े हैं। हमारी उस स्थिति से पिछड़े हैं जब शिक्षा, सत्ता, पैसा, वैभव, विलास, तकनीकी आदि हमारे साध्य नहीं हुआ करते थे बल्कि अपने मूल कर्त्तव्य पालन के सहायक हुआ करते थे। हम परमेश्वर के मंगलमय विधान में सहायक हुआ करते थे, वहीं परमेश्वर उस विधान के अनुरूप हमारी उन सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करने की व्यवस्था विकसित करते थे जिनके पीछे दौड़कर आज हम पिछड़ेपन की हीन मनोग्रंथि से ग्रसित हैं। इतिहास को यदि गहराई से जाने तो पायेंगे कि वही कर्म प्रताप कर रहे थे और वहीं कर्म अकबर के मातहत राजा लोग कर रहे थे। चन्द्रसेन से सत्ता हासिल कर मोटा राजा उदयसिंह ने भी वही कर्म किया जो चन्द्रसेन कर रहे थे अंतर केवल दृष्टिकोण का था। वे सभी भौतिक प्राप्तियों की चाह में सिद्धांतों से परे जाकर किसी अन्य के लिए युद्धरत थे वहीं प्रताप, चन्द्रसेन आदि भौतिक प्राप्तियों की उपेक्षा कर सिद्धांतों के लिए युद्धरत थे। युद्ध दोनों ही कर रहे थे। बस इसी दृष्टिकोण को बदलने की आवश्यकता है। कहानी पूरी दृष्टिकोण की ही है। यहाँ भी पिछड़ेपन के प्रति दृष्टिकोण ही बदलना है। हम पिछड़े हैं पर उनसे नहीं जो सदैव संसार के पीछे दौड़ते रहते थे और आज भी दौड़ रहे हैं। उनसे नहीं जो अपनी अर्द्ध विकसित अवस्था को ही श्रेष्ठ मानकर हमारी श्रेष्ठ परंपराओं का परिहास करते हैं, उनसे नहीं जो प्रकट में हमारी बुराई कर हमारी ही नकल करने को उतावले रहते हैं, बल्कि अपने आपसे, अपने पूर्वजों से, उनके द्वारा स्थापित असीम मापदंडों से एवं महान परंपराओं से पिछड़े हैं और इस पिछड़ेपन को दूर करने के लिए अपने आपकी और लौटना ही एकमात्र उपाय है। श्री क्षत्रिय युवक संघ उसी और प्रवाहित है।

खरी-खरी

महानता, माननीय और पाठ्यक्रम

भारतीय व्यवस्था में शिक्षा सत्ता से स्वायत रही है। समस्त गुरूकुल सत्ता द्वारा पोषित होते हुए भी सत्ता अपने आप पर स्व निर्धारित नैतिक नियंत्रण रखते हुए शिक्षा, शिक्षक एवं शिक्षणालय को पर्याप्त स्वायत्तता प्रदान करते थे। जब जब यह स्वायत्तता भंग हुई व्यवस्था में विकृति उत्पन्न हुई और परिणाम स्वरूप कोई कर्ण या एकलव्य आकांक्षित शिक्षा से वंचित रहकर विद्रोही बना तथा दूर्योधन या जरासंघ जेसी आततायी शक्तियों का साधन बना। लेकिन सामान्यतया यह स्वायत्तता बनी रही। शिक्षा ही नहीं बल्कि इतिहास लेखन, कलाएँ आदि अनेक प्रकार की रचनात्मकता सदैव सत्ता से पोषण प्राप्त करते हुए भी स्वायत्त बनी रही। लेकिन जबसे विदेशी आक्रांताओं के कारण भारत पराई एवं अर्द्धविकसित संस्कृतियों के संपर्क में आया यह स्वायत्तता समाप्त होती गई। अंग्रेजों के शासन के दौरान यह स्वायत्तता आशातीत रूप से भंग हुई और वही पढ़ाया जाने लगा जो अंग्रेजी शासन के हित में था। वही पढ़ाया जाने लगा जिससे भारतीयों में यह हीनता घर करती जाए कि बाहर से आकर भारत पर शासन करने वाले लोग भारत से श्रेष्ठ हैं। इसी के तहत हमारे नायकों को पाठ्यक्रम से हटाया गया या उन्हें उचित स्थान नहीं मिला। आजादी के बाद आये भाग्य विधाताओं ने भी यह क्रम जारी रखा। उन्हें अपने आपको श्रेष्ठ सिद्ध करना था इसलिए वे अपने समय से पहले के लोगों को पाठ्यक्रम में उचित स्थान कैसे देते। साथ ही पाठ्यक्रम भी उनके लिए तुष्टिकरण का एक साधन था जिनके वोट बटोरने थे, जिनको संतुष्ट कर सत्ता हासिल करना या उनको पाठ्यक्रम में बढ़ा चढ़ाकर नायक के रूप में प्रस्तुत किया गया और जिनको गालियां देने से उनका वोट बैंक स्थायी हो उसको स्वाभाविक रूप से नकारा गया। इस प्रकार सत्ता और शिक्षा के बीच का आदर्श संतुलन भंग हो गया। लेकिन फिर भी जो महान थे वे पाठ्यक्रम में दिए जाने वाले स्थान के मोहताज कैसे रह सकते थे? वे जनमानस में महान ही बने रहे। तमाम तरह के मिथ्या प्रचार के बावजूद महान बने रहे। राजस्थान के संदर्भ में देखा जाए तो दुर्गादास जी को पाठ्यक्रम में समुचित स्थान नहीं दिया गया और जो जो उसे भी शनैःशनै हटाया गया लेकिन क्या दुर्गादास जी की महानता इन माननीयों की कृपा की आकांक्षी रही? विगत राज्य सरकार ने इस दिशा में कुछ अच्छी पहल की एवं जन मानस में महानता को प्राप्त नायकों को नयी पीढ़ी के सामने पाठ्यक्रम के रूप में पेश करने का सराहनीय प्रयास किया। हालांकि यहाँ भी शिक्षा सत्ता के शिकंजे में कसी हुई थी इसलिए जिस प्रकार का पूर्वाग्रह पूर्ववर्ती सरकारों का रहा उससे ये सरकार भी मुक्त नहीं थी इसलिए जिस प्रकार पूर्ववर्ती सरकारों ने अपने चेहते नायकों को पाठ्यक्रम में बढ़ा चढ़ाकर पेश किया वैसे ही इस सरकार ने भी किया। जिनको वो पसंद नहीं करते थे उनको इन्होंने भी कमतर करने का प्रयास किया। अब जब सुबे में नयी सरकार बन गई है तो स्वाभाविक है कि ये भी अपने पसंद का बदलाव करने से कैसे पीछे रहेंगे? जिस प्रकार उन्होंने अपनी नापसंदगी को हटाकर पसंदगी लादी थी उसी प्रकार ये भी उनकी उस नापसंदगी को पुनः स्थापित कर अपनी नापसंदगी को हटायेंगे। लेकिन इस परिवर्तन में जो अच्छा है उसे तो नहीं हटाया जाना चाहिए। राजस्थान के वर्तमान मुख्यमंत्री ने चुनाव प्रचार के दौरान एक अनुकरणीय बात कही थी कि हम जब सत्ता में आयेंगे तो वर्तमान सरकार के अच्छे कामों को बंद नहीं करेंगे। प्रदेश की जनता को उनकी संजीदगी पर विश्वास करना चाहिए कि उन्होंने जो किया है उस पर कायम रहेंगे। लेकिन इनके माननीय शिक्षा मंत्री द्वारा प्रताप को महान कहने से बचने के प्रयास ने निश्चित रूप से सरकार के मुखिया की संजीदगी के विपरीत काम किया है लेकिन उनके इस एक प्रयास को लेकर जिस प्रकार हमने सोशल मीडिया एवं अन्यत्र प्रतिक्रिया व्यक्त की उससे यह लगता है कि प्रताप की महानता को इन माननीय की कृपा की आवश्यकता है। कोई मंत्री प्रताप को महान न माने, क्या इससे प्रताप की महानता प्रभावित होती है? वर्षों से सरकारी संरक्षण में पनपे पाठ्यक्रम में प्रताप जैसे हमारे नायकों का महान नहीं बताया गया, क्या इससे वे महान नहीं रहे।

(शेष पृष्ठ 5 पर)

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
1.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	25.01.2019 से 27.01.2019 तक	Magnum Arena, Eharjapur Road, संपर्क सूत्र : देवेन्द्रप्रतापसिंह - 7204047773, अर्जुनसिंह चौराऊ - 9590112444, पवनसिंह बिखराया - 9881132045, श्री बालाजी सिंह - 9980856535
2.	दंपत्ति शिविर	02.02.2019 से 04.02.2019 तक	आलोक आश्रम भारतीय ग्राम्य आलोकायन आश्रम, गेहूं रोड, बाड़मेर

शिविर में आने वाले युवक काला नीकर, सफेद कमीज या टीशर्ट, काली जूती या जूता व युवतियां केसरिया सलवार कमीज, कपड़े के काले जूते, मौसम के अनुसार बिस्तर (एक परिवार से दो जने हों तो अलग-अलग), पेन, डायरी, टॉर्च, रस्सी, चाकू, सूई-डोरा, कंघा, लोटा, थाली, कटोरी, चम्मच, गिलास साथ लेकर आवें। संघ साहित्य के अलावा कोई पत्र-पत्रिका, पुस्तकें एवं बहुमूल्य वस्तुएं साथ ना लावें।

दीपसिंह बैण्यांकाबास, शिविर कार्यालय प्रमुख

(पृष्ठ चार का शेष)

महानता...

इसलिए हम लोगों को एक नायक के वंशज जैसा व्यवहार करना चाहिए। हमारा सयंम एवं संजीदा व्यवहार हमारे महान पूर्वजों की महानता को प्रभावित करता है। किसी को किसी की नाजायज या जायज संतान कहना हमारे महान पूर्वजों के वंशजों को शोभा नहीं देता इसलिए विश्वास रखें कि हमारे पूर्वजों की महानता किसी सत्तासीन की कृपा की मोहताज नहीं है और फिर भी यदि प्रतिक्रिया देनी है तो उसके लिए उचित साधन और प्लेटफार्म का चयन किया जाना ही चाहिए यही हमारे महान पूर्वजों की परंपरा रही है और हमें उसी परंपरा का वाहक बनना है।

डूंगरसिंह चारड़ा को पितृशोक

भारतसिंह देवड़ा

बनासकांठा में संघ के स्वयं सेवक डूंगरसिंह चारड़ा के पिताजी **भारतसिंह देवड़ा** का देहावसान 31 दिसंबर को हो गया। पथप्रेरक परिवार शोक संतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट करता है एवं दिवंगत आत्मा की शांति के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करता है।

भगवानसिंह रताऊ को पितृशोक

गुलाबसिंह

संघ के स्वयंसेवक भगवानसिंह रताऊ के पिताजी **गुलाबसिंह** का 81 वर्ष की उम्र में 7 जनवरी को देहावसान हो गया। पथप्रेरक परिवार शोक संतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट करता है एवं दिवंगत आत्मा की शांति के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करता है।

पृथ्वीसिंह हुडील का देहावसान

पृथ्वीसिंह हुडील

श्री क्षत्रिय युवक संघ के पूर्व संघ प्रमुख श्रद्धेय आयुवानसिंह जी माद्साब के बड़े पुत्र **पृथ्वीसिंह हुडील** का 12 जनवरी को देहवासान हो गया। पथप्रेरक परिवार शोक संतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट करता है एवं दिवंगत आत्मा की शांति के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करता है।

जौहर स्मृति संस्थान के अध्यक्ष श्री धौली का निधन

जौहर स्मृति संस्थान के तीन दशक से अध्यक्ष रहे समाज सेवी ठा. उम्मेदसिंह धौली का 30 दिसंबर को निधन हो गया। श्री धौली डींगल भाषा में वीर रस के अच्छे कवि थे एवं उनकी अनेक पुस्तकें भी प्रकाशित हुई। राजस्थानी भाषा के अच्छे वक्ता एवं कवि हृदय श्री धौली ने निस्वार्थ भाव से लंबी समाज सेवा की। भावुक एवं मृदुभाषी श्री धौली को एक अच्छे समाज सेवक के रूप में सैदव याद किया जाएगा। पथप्रेरक परिवार उनको हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता है एवं परमपिता परमेश्वर से उन्हें अपने श्री चरणों में स्थान देने की प्रार्थना करता है।

आठ अधिकारी बने मेजर जनरल

भारतीय सेना में वर्ष 1986-87 की वरीयता सूची के आधार पर ब्रिगेडियर से मेजर जनरल पद के लिए पदोन्नति के लिए गत दिसंबर माह में परिणाम घोषित किया गया। सफल रहे 36 अधिकारियों में से आठ अधिकारी हमारे समाज के हैं। चयनित अधिकारियों में ब्रिगेडियर विजयसिंह, संजीव डोगरा, अशोकसिंह, एस.के.सैंगर, पदमसिंह शेखावत, विक्रमसिंह, डी.एस. राणा व संजीव चौहान शामिल हैं। पथप्रेरक परिवार की ओर से इन सबको हार्दिक बधाई।

पीसावास (धूंधाड़ा) में समाज की बैठक : जोधपुर जिले के धुंधाड़ा क्षेत्र में पीसावास स्थित पाबूजी मंदिर में समाज के गजसिंह राजपूत विश्राम सभा भवन विकास एवं कल्याण संस्थान की बैठक रखी गई जिसमें आस पास के 20 गांवों के लोग शामिल हुए। बैठक में मृत्युभोज, अफीम व शराब सेवन आदि रूढ़ियों को बंद करने एवं बालिका शिक्षा व विधवा महिलाओं की संतानों की शिक्षा में सहायता देने को लेकर चर्चा की गई। बैठक में राजपूत विकास समिति का गठन किया गया।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

धर्मशास्त्र 'गीता'

परमहंस स्वामी श्री अड़गड़ानंद जरी महाराज

गतांक से आगे...

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।।
(गीता, 18/78)

जहां योगेश्वर श्रीकृष्ण हैं (जो स्वयं योगी हो, योग प्रदान करने की जिसमें क्षमता हो वह योगेश्वर है, योग का स्वामी है। स्वामी कोई तब माना जाता है जब वह अपनी वस्तु दूसरों को प्रदान करने में स्वतंत्र हो अन्यथा वह उस वस्तु का सुरक्षाकर्मी मात्र है। इस प्रकार जहां योगप्रदाता श्रीकृष्ण हैं) और उनका अनुगमन करने वाला अनुरागी अर्जुन है, वहीं श्रीः है, वहीं विजय है, विभूति है और वहीं अचल नीति है। राजन्। विजय पाण्डवों की होगी, क्योंकि श्रीकृष्ण के वरदहस्त का संरक्षण उन्हें प्राप्त है। श्रीकृष्ण एक योगेश्वर हैं, सद्गुरु हैं।

अतः एकमात्र धर्मशास्त्र के रूप में आप सब 'गीता' लें। जो धर्म शास्त्र के बुनियाद पर खड़ा होता है, अक्षुण्ण रहता है। मात्र अफवाहों और व्यक्ति-पूजन पर आधारित पंथ थोड़े दिन चलता है, खो जाता है, पुनः नए पंथ के रूप में, क्रिया-प्रक्रिया स्वरूप उदित हो जाता है, तिरोहित हो जाता है। गत हजार-डेढ़ हजार वर्षों में भारत में हजारों धर्म पैदा हुए, लुप्त हो गए। यदि आपके पास एक धर्मशास्त्र नहीं है तो आप धार्मिक भी नहीं है। कुछ रूढ़ियां धर्म के नाम पर प्रचलित थीं, रो-धो कर उन्हें छोड़ना पड़ रहा है। कुछ रूढ़ियां शेष हैं, यह भी समाप्त होनी हैं, आने वाली पीढ़ी रो-रोकर उन्हें छोड़ने को बाध्य होगी। पूर्वजों ने जिन विवशताओं में उन्हें झेला, अब वे परिस्थितियां नहीं हैं, उनके विसर्जन के दिन आए हैं। उनका परित्याग कर धर्मशास्त्र के रूप में श्रीमद्भगवत्गीता को स्वीकार कर लेना चाहिए।

बचपन में हरिजन की छाया पड़ जाने पर जल छिड़क कर शुद्धि का प्रावधान था। एक वयोवृद्ध हरिजन को बच्चे 'दादा' कहते थे। उनकी पीठ पर्याप्त चौड़ी थी। घुटने तक धोती, शेष पूरा शरीर खुला हुआ। रेगिस्तान की भीषण गर्मी उन्हें नहीं लगती थी। शीत-ताप नियंत्रित उनका शरीर था। वह एक खेजड़ी के वृक्ष के नीचे बैठकर जूता सिलते रहते थे। एकान्त मिलने पर हम बच्चे दौड़कर उनकी पीठ पर लेट जाते थे, गर्दन पकड़कर लटक जाते थे। फिर वे ही घरवालों को बताते, 'कुंवर सा ने छू दिया।' घर वाले जल छिड़क कर हम बच्चों को शुद्ध करते। दिन में दस-बारह बार तो यह क्रम चलता ही। कभी वह धर्म था, आज न जाने कहां खो गया। आजकल उच्चकुलीन कहे जाने वाले नेतागण चुनाव में टिकट लेने और मतदाताओं से मत लेने के लिए इन तथाकथित दलितों का चरण-स्पर्श और उनके यहां भोजन करने में नहीं चूकते। मन्दिर-मस्जिदों में मिठाइयां बंटती है, रोजा-इफ्तार की दावतें होती है, होली में गले मिलते हैं और साम्प्रदायिक दंगे, आतंकवादी विस्फोट भी होते हैं। हम कोई राजनीतिक टिप्पणी नहीं कर रहे हैं। इन गुमराह लोगों का मार्गदर्शन करें, 'गीता' ले लें। धर्म के लिए पूरा विश्व जल रहा है, सुलग रहा है, इन्हें शान्ति प्रदान करें। अभी पिछले महीने दिसम्बर 2006 में इराक के राष्ट्रपति सद्दाम हुसैन को फांसी दी गई। कुछ लोग अमेरिका की आलोचना कर रहे थे, किन्तु दोष अमेरिका का नहीं है, अपनी फूट का है। वहां शिया-सुन्नी सम्प्रदायों का संघर्ष है। वहां 55 प्रतिशत लोग कुर्द कबीले के हैं। पैंतालीस प्रतिशत लोग सुन्नी हैं जिनमें सद्दाम थे। सत्ता में आने पर उन्होंने शिया समुदाय का उत्पीड़न किया। पीड़ित लोगों ने बुश को निमंत्रण दे दिया। दूसरों के झगड़े में वे क्यों आते, किन्तु उन्हें वहां तेल उद्योग दिखाई दे रहा था। वे आए। सद्दाम को फांसी दी गई। आपस की फूट ने फांसी दिया है। जिन कबीलों में फूट होती है, उनका भाग्य वे कबीले लिखते हैं जिनमें एकता हुआ करती है, किन्तु सत्ता के मद में कोई सुनता ही नहीं, समझता ही नहीं। **(क्रमशः)**

(पृष्ठ एक का शेष)

संचालन प्रमुख...

कार्यक्रम को संस्था के अध्यक्ष हनुवंत सिंह मीठड़ी, राजेन्द्र सिंह भैंसाणा तथा सवाई सिंह बेलवा ने भी संबोधित किया। इसके पश्चात उसी दिन रात्रि को गांधीनगर के सेक्टर-7 में स्थित शिव-शक्ति मंदिर में 8 से 10 बजे तक बैठक का आयोजन हुआ। साबरकांठा प्रान्त प्रमुख महावीर सिंह हरदासकाबास ने संघ का परिचय प्रस्तुत किया। संचालन प्रमुख जी ने अपने संबोधन में शाखा का महत्त्व बताते हुए कहा कि संघ अभ्यास का मार्ग है और शाखा उस अभ्यास का माध्यम है। शाखा में नियमित रूप से गए बगैर संघ को जीवन में नहीं उतारा जा सकता। करण सिंह पडुस्मा ने भी बैठक को संबोधित किया।

अगले दिन 7 जनवरी को अहमदाबाद ग्राम्य प्रान्त के काणेटी गांव में सेवानिवृत समाजबंधुओं का एक स्नेहमिलन रखा गया। यहाँ उपस्थित समाजबंधुओं से संचालन प्रमुख जी ने कहा कि आप आर्थिक व पारिवारिक जिम्मेदारी से अब निवृत्त हो चुके हैं, अब आपका उत्तरदायित्व है कि आप अपनी सामाजिक जिम्मेदारी को पूरा करें तथा अपने अनुभव तथा समय को समाज की सेवा में लगावें। कार्यक्रम को वेलूभा वकराणा, दिलावरसिंह काणेटी, आर.वी. चौहान आदि ने भी संबोधित किया। कार्यक्रम के अंत में स्नेहभोज भी रखा गया। काणेटी में रात को विशेष शाखा भी लगाई गई, जिसमें स्वयंसेवकों ने संघ संबंधी जिज्ञासाएं तथा प्रश्न संचालन प्रमुख जी के सामने रखे जिनका उन्होंने समाधान किया। शाखा के पश्चात उपस्थित जिम्मेवार स्वयंसेवकों से संघकार्य की आगामी कार्ययोजना पर चर्चा हुई। तीसरे दिन 8 जनवरी को भावनगर स्थित मनहर कुंवर बा राजपूत छात्रावास में कार्यक्रम का आयोजन हुआ। यहाँ संचालन प्रमुख जी ने कहा कि हमारी उपयोगिता ही हमारे महत्त्व को सिद्ध करती है। हमारा जीवन समाजए राष्ट्र और मानवता के लिए उपयोगी बनेए यही संघ का उद्देश्य है। हमारी उपयोगिता से ही हमारे समाज का भी महत्त्व बढ़ता है। भागीरथसिंह सांडखाखरा ने कार्यक्रम का संचालन किया। 8 जनवरी की रात्रि को अवाणिया गांव में भी बैठक का आयोजन हुआ, जिसमें संभाग प्रमुख धर्मेंद्र सिंह आम्बली भी उपस्थित रहे। संचालन प्रमुख जी ने कहा कि हमारी कौम रत्न गर्भा है। इस महान कौम में हमें ईश्वर ने जन्म दिया है अतः अपनी क्षमताओं पर विश्वास करें और पूर्ण निष्ठा से संघकार्य में जुट जावें। कार्यक्रम का संचालन शक्ति सिंह अवाणिया ने किया। अगले दिन 9 जनवरी को संचालन प्रमुख जी सुरेंद्रनगर स्थित संघ कार्यालय शक्तिधाम पहुंचे, जहां वरिष्ठ स्वयंसेवक अजीत सिंह

धोलेरा के सान्निध्य में कार्यक्रम आयोजित हुआ।

सुरेंद्रनगर में दिन में अजीत सिंह सहित जिमेवार स्वयं सेवकों ने साथ चर्चा की। शाम को राजपूत बोर्डिंग में युवकों का कार्यक्रम हुवा जिसमें बोर्डिंग के छात्र व स्टाफ शामिल हुवा। भुरुभा ने परिचय दिया। केन्द्रीय कार्यकारी महेन्द्र सिंह पांची भी कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

10 जनवरी को महेसाणा प्रान्त के पडुस्मा गांव में कार्यक्रम का आयोजन हुआ। करण सिंह कमाणा ने पूज्य तनसिंह जी व संघ का परिचय प्रस्तुत किया। संचालन प्रमुख जी ने कहा कि संघ के स्वयंसेवकों को चिंतन द्वारा अपनी चेतना के स्तर को निरंतर उच्च धरातल पर ले जाना है, जिससे वह समाज में नवप्रेरणा के अग्रदूत बन सकें। कार्यक्रम के बाद स्नेहभोज भी रखा गया। इसी दिन शाम को बबासणा गांव में भी बैठक आयोजित हुई, जिसमें महेंद्र सिंह पांची ने संघ व तनसिंह जी का परिचय प्रस्तुत किया। संचालन प्रमुख जी ने कहा कि संघ अपने आप में योग का मार्ग है। पूज्य श्री तनसिंह जी ने परंपरागत योग को युगानुकूल व्यावहारिक स्वरूप प्रदान करके क्षत्रिय युवक संघ का मार्ग हमें दिया है। इसके पश्चात बनासकांठा प्रान्त के चारों मंडलों में बैठकों का आयोजन हुआ। ये बैठकें क्रमशः पालनपुर तहसील के फतेपुर में, दियोदर स्थित महाराणा प्रताप होस्टल में, ए.पी.एम.सी. सभा हॉल थराद तथा राजपूत होस्टल धानेरा में आयोजित हुई। इस दौरान संचालन प्रमुख जी के साथ महेंद्र सिंह पांची, मंगलसिंह धोलेरा, अजित सिंह कुणघेर तथा हीरसिंह जाड़ी उपस्थित रहे। फतेपुर में 10 जनवरी को तथा दियोदर, थराद व धानेरा के कार्यक्रम 11 जनवरी को आयोजित हुए। इन बैठकों को संबोधित करते हुए संचालन प्रमुख जी ने कहा कि संघ हमारे लिए घर आई गंगा की तरह है। पूज्य श्री तनसिंह जी ने अपने अभिनव तप और साधना से इस गंगा को हमारे घर तक पहुंचाया है। मानवता के निर्माण की अनूठी कार्यशाला है श्री क्षत्रिय युवक संघ। ईश्वर की कृपा से हमें यह अवसर मिला है कहीं लापरवाही अथवा अज्ञानवश हम ये अवसर चूक न जाये। 11 जनवरी को प्रवास की समाप्ति हुई तथा संचालन प्रमुख जी पुनः जयपुर हेतु रवाना हुए। केन्द्रीय कार्यकारी महेन्द्रसिंह पांची व मंगलसिंह धोलेरा भावनगर के पश्चात पूरे प्रवास में साथ रहे।

साधुवाद...

सामाजिक न्याय के साथ साथ आर्थिक न्याय को भी आरक्षण का आधार बनाने की मांग बरसों से चली आ रही थी। नरसिम्हा राव सरकार ने इसमें पहल की, वाजपेयी सरकार ने केबीनेट में प्रस्ताव लिया, आयोग बनाया, मनमोहन सिंह सरकार ने पुनः आयोग बनाया और इस सरकार ने इस अवधारणा को संवैधानिक मान्यता प्रदान की। ये सभी सरकारें साधुवाद की पात्र हैं। विभिनन संगठनों ने विभिन्न मार्गों से अपनी अपनी समझ के अनुसार इस हेतु प्रयास किए और उनके प्रयासों के इस परिणाम पर वे सब भी साधुवाद के पात्र हैं। सब तैयार थे, कोई विरोध नहीं कर रहा था, लेकिन निर्णायक पहल करने की कोई हिम्मत नहीं कर रहा था लेकिन राजनीतिक परिस्थितियों की पृष्ठभूमि में इस सरकार ने यह निर्णायक पहल की इसके लिए एक बार पुनः यह सरकार साधुवाद की पात्र है। लेकिन इस साधुवाद के बीच यह आशंका बरकरार है कि क्या यह व्यवहारिक रूप ले पायेगा? क्या व्यवहारिक रूप से इन्हीं प्रावधानों के तहत यह लाभदायक रहेगा। इसके प्रावधानों में जमीन, मकान आदि के जो अवरोध खड़े किए गए है क्या ये वास्तव में इस अवधाराणा की मूल भावना में बाधक नहीं होंगे। क्या राजस्थान जैसे राज्य में 5 एकड़ जमीन की सीमा व्यवहारिक है? नगर पालिका क्षेत्र में क्या 100 गज का मकान होना आर्थिक रूप से अमीरी का सूचक है? क्या जिनके कमाई 8 लाख से कम है लेकिन घर 100 गज से बड़ा है तो वे गरीब नहीं हो सकते? ऋण लेकर 1000 वर्ग फीट का फ्लेट लेने वाला क्या अमीर हो गया? नॉन नोटिफाईड म्यूनिसिपलिटी एरिया में यदि 200 गज पुस्तैनी जमीन है तो क्या वह अमीर हो गया? आय का बंधन समझ में आता है लेकिन कमाई न देने वाली अचल संपत्ति का बंधन क्या व्यवहारिक है? क्या सरकार द्वारा बनाये गए बंधनों में रहने वाले लोग अपनी संतानों को उच्च शिक्षण संस्थानों में पढ़ाते हैं जो आरक्षण का लाभ लेंगे। इसलिए साधुवाद के साथ साथ इसका लाभ मिलने की आशंका बरकरार है।

(पृष्ठ एक का शेष) शीतकालीन....

बालोतरा

कचनारा (मध्यप्रदेश)

इसी प्रकार मध्यप्रदेश के मालवा प्रान्त में मंदसौर के पास स्थित कचनारा (नाहरगढ़) गांव में 24 से 27 दिसंबर की अवधि में प्रा.प्र.शि. सम्पन्न हुआ। संघ के केन्द्रीय कार्यकारी प्रेम सिंह रणधा के संचालन में सम्पन्न इस शिविर में सुवासरा तथा सीतामऊ क्षेत्र के 25 गाँवो के 160 युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। रणधा ने शिविरार्थियों से कहा कि आप संघ के शिविर में आये हैं ये आपके लिए अनुपम अवसर है अपने जीवन को सार्थक करने के मार्ग पर अग्रसर करने का। किन्तु ये अवसर चुनौती भी है जिसको साहसपूर्वक स्वीकार करना ही क्षत्रियत्व है। संघ हमें क्षत्रिय बनाने के लिए हमारे द्वार आया है, हमें बस स्वयं को संघ को सौंपने की आवश्यकता है। राजस्थान से भी लगभग 15 सहयोगी शिविर में उपस्थित रहे। महेंद्र सिंह फतेहगढ़ ने सहयोगियों के साथ मिलकर व्यवस्था का जिम्मा सम्भाला। गुजरात में भी कामरेज (सूरत) के जॉय एन जॉय वीकेंड होम में एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर 23 से 25 दिसंबर की अवधि में सम्पन्न हुआ। केन्द्रीय कार्यकारी महेंद्र सिंह पांची के संचालन में सम्पन्न इस शिविर में क्षेत्र के 110 शिविरार्थी सम्मिलित हुए। शिविरार्थियों को विदाई देते हुए संचालक ने कहा कि तीन दिनों में संघ ने जो संस्कार रूपी बीज हमारे भीतर बोया है उसे सिंचित करने की जिम्मेदारी हमारी है। यहाँ जो सीखा है उसे आचरण में ढ़ालने से ही हमारे जीवन में निखार आएगा। शिविर में कच्छ काठियावाड़ राजपूत समाज के कार्यकर्ता भी सम्मिलित हुए। इसी प्रकार राजस्थान में नागौर में मेड़ता सिटी स्थित श्री चारभुजा राजपूत छात्रावास में 25 से 28 दिसंबर की अवधि में शिविर का आयोजन हुआ जिसमें भुणास, जिटिया, रिया बड़ी, रासलियावास, ओलादन, बिटन, मेड़ता सिटी, मेड़ता रोड़, इटावड़ा, दधवाड़ा आदि गाँवों के 105 युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर का संचालन करते हुए नत्थू सिंह छापड़ा ने कहा कि संघ द्वारा समाज में क्षत्रियोचित संस्कारो के निर्माण के उद्देश्य से विगत 72 वर्षों से निरंतर ऐसे शिविर आयोजित किए जा रहे हैं। हम सौभाग्यशाली हैं कि इस पवित्र यज्ञ में हमें भी सहभागी बनने का अवसर मिला है। ऊगम सिंह गोकुल तथा जब्बर सिंह दौलतपुरा ने शिविर की व्यवस्था संभाली। एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर सेमारी (उदयपुर) में भी 27 से 30 दिसंबर की अवधि में आयोजित हुआ। शिविर में भीमपुर, सेमारी, शक्तावतो का गुडा, चन्दौडा, मेडी, केजड, थडा, बाणा, भेकडा, बेमला, परतलिया, ऊपला गुडा, नीचला गुडा (उदयपुर), लाम्बापारडा, सज्जन सिह जी का गडा, अमर सिह जी का गडा, कलिंजरा (बांसवाडा), गेहूंवाडा, वालाई (डूंगरपुर), झीलवाडा (राजसमन्द) से लगभग 110 शिविरार्थियो ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर का संचालन करते हुए भँवर सिंह बेमला ने कहा कि गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने स्वधर्म पालन को श्रेयसाधन का आधार बताया है। श्री क्षत्रिय युवक संघ भी हमें स्वधर्म पालन की राह पर चला कर हमारे जीवन को सार्थक कर रहा है। शिविर के अंतिम दिन स्नेहमिलन भी रखा गया जिसमें आस-पास के क्षेत्र से समाजबंधु सम्मिलित हुए। कार्यक्रम में संघ के केन्द्रीय कार्यकारी गंगा सिंह साजियाली, पुष्पेन्द्र सिंह खेड़ा कच्छवासा, दलपतसिंह गुडाकेसरसिंह, कर्नल केसर सिंह जी सेमारी तथा डूंगर सिंह भीमपुर भी उपस्थित रहे। इसी प्रकार बालिकाओं के दो प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर पुष्कर व बालोतरा में सम्पन्न हुए। पुष्कर में ब्रह्मा मंदिर के पास स्थित जयमलकोट में 26 से 29 दिसंबर की अवधि में शिविर का आयोजन हुआ। शिविर का संचालन श्रीमती रतन कँवर सेतरावा ने किया। उन्होंने शिविर में उपस्थित बालिकाओं से कहा कि वर्तमान की विपरीत परिस्थितियों में संघ द्वारा प्रदत्त संस्कारों को जीवन में ढालने के लिए बार बार अभ्यास की आवश्यकता है। इसके लिए संघ के निरंतर सम्पर्क में रहना आवश्यक है। शिविर में जयपुर, अजमेर, भीलवाड़ा, चित्तौड़, नागौर जिलों से 120 बालिकाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। इसी प्रकार बालोतरा में वीर दुगार्दास राजपूत छात्रावास में 25 से 28 दिसंबर की अवधि में बालिका शिविर आयोजित हुआ, जिसका संचालन श्रीमती उषा कँवर पाटोदा ने किया। शिविर में क्षेत्र की लगभग 140 बालिकाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। बालिकाओं को विदा देते हुए श्रीमती पाटोदा ने कहा कि संघ की हमसे बहुत अपेक्षाएं हैं, उन अपेक्षाओं पर हमें खरा उतरना है। अपने जीवन को संघ के दिए संस्कारों के अनुरूप बनाकर समाज की नींव में क्षत्रियत्व की पुनर्स्थापना का महत्त्वपूर्ण दायित्व हमें निभाना है। इसी कड़ी में गुजरात में संघ के कार्यालय शक्तिधाम में वरिष्ठ स्वयं सेवक अजीतसिंह धोलरा के सानिध्य में महिलाओं का एक विशेष शिविर रखा गया जिसमें धोलेरा ने संघ के प्रेरणा ग्रंथ गीता के बारे में विस्तार से समझाया। इसी प्रकार इस अवधि में पांच माध्यमिक शिविर आहोर, बीकानेर, देगराय, फोगेरा और लाडनूँ में सम्पन्न हुए। जालोर संभाग में आहोर स्थित संस्कार पब्लिक स्कूल में 25 से 31 दिसंबर तक माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन हुआ जिसका संचालन खींव सिंह सुल्ताना ने किया। उन्होंने शिविरार्थियों से कहा कि इन सात दिनों में संघ ने हमें त्याग, बलिदान, सत्य, परोपकार, परस्पर सहयोग और कर्त्तव्य परायणता का जो पाठ पढ़ाया है, वह जीवन भर हमें सही राह पर चलाने में समर्थ है। शिविर में पांचोटा, हिंगोला, अगवरी, उखरडा, थुम्बा, बाला, भवरानी, धींगाणा, डोडियाली, रोडला, सांडेराव, झाड़ोली, अलावा, भुण्डवा, मोरुआ, देसू, देलदरी, पचानवा, गुड़ा केसरसिंह, गुड़ा रामसिंह, सुरावा, केरिया, मंडली, रातड़ी, चाँदणा, काणदर, मंडला, दासपां, झलोड़ा आदि गाँवों सहित झीरिगढ़ (धौलपुर), भीमपुर, गोगुन्दा (उदयपुर), कोटा आदि स्थानों से लगभग 105 युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर के दौरान आबकारी अधिकारी रविन्द्रप्रताप सिंह केरली द्वारा छात्रों को कैरियर सम्बन्धी मार्गदर्शन भी प्रदान किया गया। जालोर जिला प्रमुख बन्नेसिंह गोहिल, रानीवाड़ा विधायक नारायणसिंह देवल, आहोर विधायक छगनसिंह राजपुरोहित, जालोर ग्रेनाइट एसोसिएशन अध्यक्ष लालसिंह धानपुर, कांग्रेस के जिला प्रवक्ता योगेन्द्र सिंह कुम्पावत सहित अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने शिविर में आकर श्री क्षत्रिय युवक संघ की कार्यप्रणाली को देखा व संस्कार निर्माण के कार्य की सराहना की। शिवप्रताप सिंह भैंसवाड़ा, कृष्णपाल सिंह सामूजा, सूर्यवीरसिंह निम्बला, प्रहलाद सिंह रामा, विक्रम सिंह रातड़ी, जबर सिंह शंखवाली, भरतसिंह भुण्डवा, जितेन्द्र सिंह महेशपुरा, कुंदन सिंह थुम्बा, रविन्द्र सिंह टेवाली, हनवंत सिंह रसियावास, करणसिंह मोरुआ, हिन्दू सिंह भाटा आदि ने शिविर व्यवस्था हेतु सहयोग किया।

इसी अवधि में जैसलमेर संभाग में रासला ग्राम पंचायत में श्री देगराय मंदिर परिसर स्थित जूनी जाल मंदिर में माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ। देवीसिंह माडपुरा के संचालन में सम्पन्न इस शिविर में मुलाना, भैंसड़ा, मेहराजोत, सांवता, भोपा, दवाड़ा, सांकड़ा, सनावड़ा, लूणा, जिंजिनियाली, बडोड़ागांव, राजगढ़, रामगढ़, बड्डा, बैरिसियाला सहित जोधपुर, डूंगरपुर, बाड़मेर जिलों से भी शिविरार्थी सम्मिलित हुए। माडपुरा ने शिविरार्थियों से कहा कि मनुष्य जन्म अमूल्य है और उसमें भी क्षत्रिय के घर में जन्म बड़े सौभाग्य की बात है। क्षत्रिय के रूप में हमारा दायित्व है कि हम अपने इस जीवन को मानवता की सेवा में खपाएं। बीकानेर संभाग में भी इसी अवधि में शहर स्थित संघ कार्यालय नारायण निकेतन में माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ। शिम्भू सिंह आसरवा के संचालन में सम्पन्न शिविर में झंझेऊ, पुन्दलसर, लूणासर, करणीपुरा, किरतासर, शोभाणा, भादला, बेलासर, नयागांव, गड़ियाला, मेड़ी का मगरा गांवों के साथ ही पंचवटी छात्रावास, विजय भवन, नारायण निकेतन शाखाओं से भी स्वयंसेवक सम्मिलित हुए। आसरवा ने शिविरार्थियों को बताया कि जो स्वयं जागृत है और अन्यों को भी जगाने का कार्य करता है, वही क्षत्रिय है। हमने संघ से जो श्रेष्ठ तत्व पाया है, उसे आगे प्रसारित करना हमारा दायित्व है। शिविर के दौरान ही 30 दिसंबर को स्नेहमिलन भी आयोजित हुआ, जिसमें पूरे संभाग से स्वयंसेवक सम्मिलित हुए तथा आगामी सत्र हेतु कार्ययोजना तैयार की गई। इसी प्रकार शिव प्रान्त में 25 से 30 दिसंबर की अवधि में एक माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर फोगेरा गांव में आयोजित हुआ, जिसका संचालन केन्द्रीय कार्यकारी गजेन्द्र सिंह आऊ ने किया। उन्होंने शिविर के अंतिम दिन शिविरार्थियों के भाल पर तिलक लगाकर उन्हें विदाई देते हुए कहा कि पूज्य श्री तनसिंह जी ने हमारे लिए संसार का श्रेष्ठतम मार्ग श्री क्षत्रिय युवक संघ के रूप में प्रदान किया है। त्याग और बलिदान के हमारे पूर्वजों के पथ पर ही हमें पुनः चलायमान करने का कार्य संघ कर रहा है। इसी में हमारा, समाज का, राष्ट्र का और मानवता का हित समाहित है। शिविर में फोगेरा, तुड़बी, धारवी, जानसिंह की बेरी, भिंयाड़, उण्डखा आदि गांवों के युवाओं ने प्रशिक्षण लिया। नखतसिंह जानसिंह की बेरी ने शिविर की व्यवस्था संभाली। नागौर संभाग का माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर 1 से 7 जनवरी तक माधव कॉलेज परिसर लाडनूं में संपन्न हुआ। इस शिविर में सिंघाना, ढूंढिया, आसरवा, छापड़ा, जैतसर, हुडास, कोडमसर, करनु, बगतपुरा, भगतपुरा, ढींगसरी, जुलियासर, खुड़दी, आसलखेड़ी, गुगरियाली आदि गांवों के युवाओं ने प्रशिक्षण लिया। शिविर में 5 जनवरी को माननीय संघ प्रमुख श्री का भी सानिध्य मिला। 6 जनवरी को स्थानीय सहयोगियों का स्नेह मिलन रखा गया। शिविर का संचालन रेवंतसिंह पाटोदा ने किया एवं व्यवस्था का दायित्व नंदसिंह बेड़ एवं विक्रमसिंह ढींगसरी ने निभाया। 4 से 6 जनवरी तक जोधपुर संभाग के शेरगढ़ प्रांत में मदासर देड़ा में एक विशेष शिविर रखा गया जिसमें विभिन्न व्यवसायों में सेवारत समाज बंधुओं ने भाग लिया। केन्द्रीय कार्यकारी प्रेमसिंह रणधा के संचालन में संपन्न शिविर में संघ कार्य में सदा से सहयोगी रहे बंधुओं को शिविर के माध्यम से सांघिक प्रक्रिया से अवगत करवाया गया। उम्र में वरिष्ठ होने के बावजूद सभी शिविर्थियों ने खेलों सहित सभी कार्यक्रमों में बढ़ चढ़कर भाग लिया एवं संघ की सामूहिक संस्कारमयी कर्मप्रणाली को समझने का प्रयास किया। व्यवस्था का दायित्व पाबूसिंह लवारन ने संभाला।

हे युग दृष्टा! आपने

कर्म योग का पाठ पढ़ाने वाली सत्य साधना दी।
प्राणों में अमृत को छलकाने वाली भक्ति भावना दी।
दाता का श्रेय दिलाने वाली त्याग प्रेरणा दी।
जड़ चेतन को राह दिखाने वाली धर्मधारणा दी।
एक सूत्र में एक राह पर लाने वाली सुप्त एकता दी।

आपको शत् शत् नमन...

पूज्य तनसिंहजी

की 95वीं जयंती पर उनके सभी अनुगामियों को हार्दिक बधाई

शुभेच्छु एवं श्रद्धावनत :

नीरसिंह सिंधाणा (नागौर) हाल मुंबई

भरतसिंह झाड़ोली वीर (सिरोही), हाल मुंबई

सायरसिंह तलेटा (सिरोही), हाल मुंबई

जगदीशसिंह दुजोद (सीकर), हाल मुंबई

नाथूसिंह काठाड़ी (बाड़मेर), हाल मुंबई

भोपालसिंह झलोड़ा भाटियान (जैसलमेर)

राजेन्द्रसिंह तड़वा (जालोर) हाल मुंबई

जालमसिंह चारणीम (जालोर) हाल मुंबई

भाखरसिंह आशापुरा (बीकानेर) हाल मुंबई

पृथ्वीसिंह दूधवा (बाड़मेर) हाल मुंबई

मदनसिंह थूर (जालोर) हाल मुंबई

पहाड़सिंह बिबलसर (जालोर) हाल मुंबई

मदनसिंह नरसाणा (जालोर) हाल मुंबई

विक्रमसिंह झोटड़ा (जालोर) हाल मुंबई

मनोहरसिंह गंगाला (बाड़मेर) हाल मुंबई

भगवतसिंह काठाड़ी (बाड़मेर) हाल मुंबई

श्रवणसिंह इन्द्राणा (बाड़मेर) हाल मुंबई

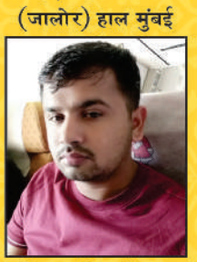
जीवराजसिंह पीपळून (बाड़मेर) हाल मुंबई

अरविंदसिंह मांडावास (पाली) हाल मुंबई

भगवानसिंह खाराबेरा (जोधपुर) हाल मुंबई

हिंगलाजसिंह चूली (बाड़मेर) हाल मुंबई

प्रेमसिंह चुरा (जालोर) हाल मुंबई

शंभूसिंह धीरा (बाड़मेर) हाल मुंबई

चक्रवर्तीसिंह (भमसा) देसु (जालोर)

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org